Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for pg semester 1

Topic:- हर्ष की धार्मिक नीति (Religious Policy of Harsha)

हर्ष एक धर्मसहिष्णु शासक था। शैवमतावलंबी होते हुए भी उसने अन्य धर्मों को भी समान दृष्टिकोण से देखा। वह विभिन्न संप्रदायों के विद्वानों को बुलवाकर उनसे धर्म-चर्चा करता था।

अपनी बहन राज्यश्र, के कारण वह बौद्धधर्म की तरफ आकृष्ट हुआ तथा हेनसांग के प्रभाव के कारण वह बौद्धधर्म का अनुयायी बन गया। हर्ष के प्रयासों से महायानी बौद्धधर्म का चीन में प्रचार हुआ। भारत में इसके प्रसार की गति तीव्र हुई। ह्वेनसांग के सम्मान में तथा बौद्धधर्म के प्रसार के लिए हर्ष ने कन्नौज में एक सभा बुलाई, जिसमें 20 राज्यों के राजा, विभिन्न धर्मों के विद्वान, ब्राह्मण तथा सहस्त्रों हीनयानी और महायानी बौद्ध इकट्ठे हुए। इस अवसर पर कनौज में एक विशाल संघाराम तथा 100 फीट ऊँचा बुर्ज बनवाया गया। इसमें हर्ष के कद के बराबर एक सोने की प्रतिमा (बुद्ध की) स्थापित की गई। इसी अवसर पर संघाराम में आग लगने, हर्ष की हत्या का प्रयास और हर्ष द्वारा 500 ब्राह्मणों के निष्कासन का उल्लेख भी ह्वेनसांग करता है। इस सभा ने महायान संप्रदाय की श्रेष्ठता स्थापित की। हर्ष ने काश्मीर से बुद्ध का दाँत मँगवाकर कन्नौज में उसे प्रतिष्ठित किया।

बौद्धधर्म का समर्थक होने के बावजूद ब्राह्मणधर्म में उसकी अभिरुचि कम नहीं हुई। प्रत्येक पाँचवें वर्ष वह प्रयाग में महामोक्ष-परिषद का आयोजन कराता था, जिसमें बुद्ध, सूर्य और शिव की पूजा होती थी। इस अवसर पर वह अपने पाँच वर्षों की अर्जित संपत्ति, यहाँ तक कि अपने वस्त्र भी दान में दे देता था। ह्वेनसांग छठे परिषद का उल्लेख करता है। इस अवसर पर 5 लाख व्यक्ति (श्रमण, निग्रंथ, ब्राह्मण, निर्धन, अनाथ) एकत्र हुए। यह परिषद 75 दिनों तक चली। इसमें प्रथम दिन बुद्ध की, दूसरे दिन सूर्य (आदित्य), तीसरे दिन शिव की पूजा होती थी तथा चौथे दिन दान दिया जाता था। इस प्रकार, अपनी प्रजा के भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए हर्ष ने अथक प्रयास किए।

साहित्य एवं शिक्षा को संरक्षण:·–हर्ष एक विद्यानुरागी शासक के रूप में विख्यात है। प्रो० आर० सी० मजुमदार के अनुसार वह युद्ध एवं शांति के कार्यों में समान रूप से कुशल था। जिस कुशलता से वह तलवार पकड़ सकता था, उतनी ही कुशलता से कलम भी। वह स्वयं विद्वान था तथा विद्वानों को समुचित आदर देता, उन्हें दान देता तथा शैक्षणिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक अनुदान देता था। वास्तव में हर्ष की महत्ता का एक कारण शिक्षा एवं साहित्य को प्रश्रय देना भी है।' वाणभट्ट के अनुसार हर्ष काव्य-

रचना में दक्ष था। 11वीं शताब्दी का गुजराती कवि सोड्ढल अवंतिसुंदरीकथा में हर्ष को विक्रमादित्य, मुंज और भोज जैसे कवींद्रों की श्रेणी में रखता है। हर्ष ने प्रियदर्शिका, नागानंद एवं रत्नावली नामक तीन नाटक लिखे (कुछ विद्वानों के अनुसार धावक ने इन्हें हर्ष के बदले लिखा)। इत्सिंग के अनुसार हर्ष ने नागानंद की रचना कर राजदरबार में उसे अभिनीत भी करवाया। हर्ष का दरबार ख्यातिप्राप्त विद्वानों से भरा रहता था। इनमें सर्वाधिक विख्यात वाणभट्ट था। वाण ने कादम्बरी, हर्षचरित, पूर्वपीठिका और चण्डीशतक की रचना की। वाण के अतिरिक्त मयूर और मातंग दिवाकर भी हर्ष के दरबारी थे। मयूर ने सूर्यशतक की रचना की। उड़ीसा का प्रसिद्ध विद्वान जयसेन भी हर्ष के समय में था, जिसे हर्ष ने अस्सी नगरों (गाँवों) की आमदनी दानस्वरूप देनी चाही, परंतु उसने नहीं ली। नालंदा-महाविहार को भी अनेक ग्राम दानस्वरूप दिए गए।